①

UPC - 0033212401

Total Pages : 4 Roll No. ....

B.A. (Second Semester)
NEP - Examination, 2024-25
हिन्दी साहित्य (अनिवार्य प्रश्न पत्र)
Paper–First (Major)
[हिंदी कथा साहित्य]

Time : 3 Hours] **[Maximum Marks : 75**

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(खण्ड-अ)

1. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं तीन की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए : (6×3=18)

(क) मैंने उस समय यह भी अनुभव किया कि उन्हें अब एकान्त उतना बुरा नहीं लगता। वे शाम के वक्त छत पर खटोला डाले ऊपर उड़ती हुई चीलों को ही चुपचाप देख रही हैं। कभी पतंग के पेंच देखती है और कटी हुई पतंग पर, जब तक ओझल न हो जाए, आँख गाड़े रहती हैं।

(ख) इतनी उम्र बिताकर बहुतों को मरते और उनमें से बहुतों को जीते देखकर अगर मैं कुछ चाहता हूँ तो वह यह है कि भीतर का दर्द मेर इष्ट हो। धन न चाहूँ, धन मैल है, मन का दर्द अमृत है, सत्य का निवास और कहीं नहीं है।

(ग) मैं कगोर पर का वृक्ष हो रहा हूँ, न मालूम कब गिर पड़ूं। अब तुम्हीं घर के मालिक मुख्तार हो। नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर का मजार है। निगाह चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिए। ऐसा कम ढूँढना जहाँ कुछ ऊपरी आय हो, मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चांद है, जो एक दिन दिखाई देता है और फिर घटते-घटते लुप्त हो जाता है।

(घ) चम्पा! मैं ईश्वर को नहीं मानता, मैं पाप को नहीं मानता, मैं दया को नहीं समझ सकता, मैं उस लोक में विश्वास नहीं करता, पर अपने हृदय के एक दुर्बल अंश पर श्रद्ध हो चली है। तुम न जाने कैसे एक बहकी हुई तारिख के समान मेरे शून्य में उदित हो गई हो। आलोक की एक कोमल रेखा इस निविड़ तम में मुस्कराने लगी। पशु-बल और धन के उपासक के मन में किसी शांत और कांत कामना की हंसी खिलखिलाने लगी, पर मैं न हँस सका।

(ङ) भय से चीखकर ओट में हो जाने के लिए भागती हुई औरतों पर दया करके दरवाजे भीड़ सामने से हट गयी थी। चौधरी बेसुध पड़े थे। जब उन्हें होश आया, ड्योढी का परदा आँगन में सामने पड़ा था, परन्तु उसे उठाकर फिर से लटका देने का सामर्थ्य उनमें शेष न था। शायद अब उसकी आवश्यकता भी न रही थी।

(खण्ड-ब)

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

2. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (6×2=12)

(क) हिन्दी गद्य के विकास पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

(ख) हिन्दी उपन्यास के उद्भव एवं विकास पर प्रकाश डालिए।

(ग) 'त्याग-पत्र' उपन्यास की कथावस्तु का सार अपने शब्दों में लिखिए।

(घ) 'नमक का दरोगा' कहानी के आधार पर प्रेमचंद की कहानी कला की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(खण्ड-स)

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

3. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों का उत्तर विस्तारपूर्वक दीजिए : (15×3=45)

(क) हिन्दी कहानी के क्रमिक विकास पर प्रकाश डालिए।

(ख) कहानी के प्रमुख तत्वों के आधार पर 'उसने कहा था' कहानी की समीक्षा कीजिए।

(ग) 'त्याग पत्र' उपन्यास की नायिका मृणाल का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(घ) 'वापसी' कहानी की कथावस्तु व वातावरण संबंधी विशेषताओं की समीक्षा कीजिए।

(ङ) 'पाजेब' कहानी के आधार पर सिद्ध कीजिए कि जैनेन्द्र एक मनोवैज्ञानिक कहानीकार है।

---

(1)

UPC - 0033612401

Total Pages : 4

Roll No. ....

B.A. (Sixth Semester)

NEP - Examination, 2025

Hindi Literature

Paper–First (Major)

[हिन्दी निबंध]

Time : 3 Hours] **[Maximum Marks : 75**

नोट : निम्नलिखित सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। अंक विभाजन प्रत्येक प्रश्न के समक्ष निर्दिष्ट हैं।

(खण्ड-अ)

1. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं **तीन** की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए : (6×3=18)

(क) संस्कृत यद्यपि बोल चाल की भाषा इस समय न रह गयी थी, पर हर एक विषय के ग्रन्थ इसमें एक से एक बढ़-चढ़कर बनते गये और साहित्य की तो यहाँ तरक्की हुई कि कालिदास आदि कवियों की उक्तियुक्ति से मुकाबिले वेद

(2)

का भद्दा और रूखा साहित्य अत्यन्त फीका मालूम होने लगा। कालिदास की एक-एक उपमा पर और भवभूति, भारवि, श्रीहर्ष, बाण की एक-एक छटा पर वेद का उमदा से उमदा सूक्त, जिनमें हमारे पुराने आर्यों ने मरपच साहित्य की बड़ी भारी कारीगरी दिखलाई, न्यौछावर हैं।

(ख) कहते हैं कि शुतुर्मुर्ग का पीछा कीजिए तो वह बालू में सिर छिपा लेता है। समझता है कि मेरी आँखों से पीछा करने वाला नहीं दिखता तो उसे भी मैं नहीं दिखता। लंबा-चौड़ा शरीर चाहे बाहर रहे, आँखें और सिर तो छिपा लिया। कछुए ने हाथ पाँव-सिर भीतर डाल दिया।

(ग) जो लोग स्वार्थवश व्यर्थ की प्रशंसा और खुशामद करके वाणी का दुरुपयोग करते हैं वे सरस्वती का गला घोंटते हैं। ऐसी तुच्छ वृत्ति वालों को कविता न करना चाहिए। कविता उच्चाशय, उदार और नि:स्वार्थ हृदय की उपज है। सत्कवि मनुष्य मात्र के हृदय में सौन्दर्य का प्रवाह बहाने वाला है। उसकी दृष्टि में राजा और रंक सब समान हैं।

(घ) इस समय भारतीय नारी के पास ऐसा कौन-सा विशिष्ट गुण नहीं है, जिसे पाकर किसी भी देश की मानवी देवी न बन सकती हो। उसमें उस सहनशक्ति की सीमा समाप्त है जिसके द्वारा मनुष्य घोर-से-घोरतर अग्नि परीक्षा हँसते-हँसते पार का सकता है और अपने लक्ष्य के मार्ग में बाधाओं पर बाधाएँ देखकर नहीं सिहरता; उसमें वह त्याग है जो मनुष्य की क्षुद्र-से-क्षुद्र स्वार्थ वृत्ति को क्षण में नष्ट कर डालता है।

(3)

(ङ) सफलता के महल का सामने का आम दरवाजा बन्द हो गया है। कई लोग भीतर घुस गये हैं और उन्होंने कुण्डी लगा दी है। जिसे उसमें घुसना है, वह रूमाल नाक पर रखकर नाबदान में घुस जाता है। आसपास सुगंधित रूमालों की दुकानें लगी हैं। लोग रूमाल खरीदकर उसे नाक पर रखकर नाबदान में से घुस रहे हैं।

(खण्ड-ब)

2. निम्नांकित में से किन्हीं **दो** लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (6×2=12)

(क) "कछुआ धरम" निबंध का सार संक्षेप में लिखिए।

(ख) "अस्ति की पुकार हिमालय" निबंध का सार लिखिए।

(ग) महादेवी वर्मा के निबंधों की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।

(घ) "साहित्य जन समूह के हृदय का विकास है" निबंध की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

(ङ) "विद्यानिवास मिश्र गद्यकारों में श्रेष्ठ निबंधकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं।" इस कथन की समीक्षा कीजिए।

(खण्ड-स)

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (15×3=45)

(क) हिन्दी निबंध के उद्भव एवं विकास पर प्रकाश डालिए।

(4)

(ख) "आचार्य शुक्ल के निबंधों में उनके व्यक्तित्व की छाप स्पष्ट दिखाई पड़ती है।" इस कथन की समीक्षा कीजिए।

(ग) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंधों की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

(घ) "पगडंडियों का जमाना" निबंध का सार लिखिए।

(ङ) "विषयवस्तु, अभिव्यञ्जनाशिल्प सभी दृष्टियों से शुक्लोत्तर युग के निबंध सर्वश्रेष्ठ हैं।" इस कथन की समीक्षा कीजिए।

Total Pages : 3 Roll No. ....

UMJ-1641

B.A. (IV Semester) Examination, 2024

HINDI

Paper–First (Major)

[नाटक एवं स्मारक साहित्य]

Time : 3 Hours] **[Maximum Marks : 75**

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(खण्ड-अ)

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. (क) आह, कितनी कठोरता है! मनुष्य के हृदय में देवता को हटाकर राक्षस कहां से घुस आता है? कुमार की स्निग्ध, सरल औश्र सुन्दर मूर्ति को देखकर कोई भी प्रेम से पुलकित हो सकता है। किंतु, उन्हीं का भाई? आश्चर्य।

(ख) राजा अपने राष्ट्र की रक्षा करने के असमर्थ है, तब भी उस राजा की रक्षा होनी ही चाहिए। अमान्य, यह कैसी विवशता है। तुम मृत्युदंड के लिए उत्सुक। महादेवी आत्महत्या करने

(2)

के लिए प्रस्तुत। फिर यह हिचक क्यों? एक बार अंतिम बल से परीक्षा कर देखो। बचोगे तो राष्ट्र और सम्मान भी बचेगा, नहीं तो सर्वनाश।

(ग) राजनीति ही मनुष्यों के लिए सब कुछ नही है। राजनीति के पीछे नीति से भी हाथ न धो बैठो, जिसका विश्व मानव के साथ व्यापक संबंध है। राजनीति की साधारण छलनाओं से सफलता प्राप्त करके क्षण-भर के लिए तुम अपने को चतुर समझने की भूल कर सकते हो, परंतु इस भीषण संसार में एक प्रेम करने वाले हृदय को खो देना सबसे बड़ी हानि है।

(घ) प्रेम का नाम न लो! वह एक पीड़ा थी जो छूट गई। उसकी कसक भी धीरे-धीरे दूर हो जाएगी। राजा, मैं तुम्हें प्यार नही करती। मैं तो दर्प से दीप्त तुम्हारी महत्वमयी पुरूष-मूर्ति की पुजारिन थी, जिसमें पृथ्वी पर अपने पैरों से खड़े रहने की दृढ़ता थी। इस स्वार्थ-मलिन कलुष से भरी मूर्ति से मेरा परिचय नहीं। अपने तेज की अग्नि में जो सब कुछ भस्म कर सकता हो, दस दृढ़ता का, आकाश के नक्षत्र कुछ बना-बिगाड़ नही सकते।

(ङ) इतना बड़ा उपहास........ धर्म के नाम पर स्त्री की आज्ञाकारिता की यह पैशाचिक परीक्षा.......... मुझसे बलपूर्वक ली गयी है। पुरोहित! तुमने जो मेरा राक्षस-विवाह कराया – उसका उत्सव भी कितना सुंदर है! यह जन-संहार देखो, अभी उस प्रकोष्ठ में रक्त से सनी हुई शकराज की लोथ पड़ी होगी। कितने ही सैनिक दम तोड़ते होंगे। और इस रक्तधारा में तिरती हुई मैं राक्षसी-सी सांस ले रही हूं। (6×3=18)

(3)

(खण्ड-ब)

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

2. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (6×2=12)

(क) 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के नायक का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(ख) रेखाचित्र तथा संस्मरण को परिभाषित कीजिए।

(ग) नाटक की परिभाषा एवं उसके तत्वों का वर्णन कीजिए।

(घ) 'अज्ञेय' के कृतित्व तथा व्यक्तित्व पर एक लेख लिखिए।

(खण्ड-स)

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

3. निम्नांकित प्रश्नों में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों का उत्तर विस्तार से दीजिए। (15×3=45)

(क) स्मारक साहित्य के उद्‌भव एवं विकास पर एक निबंध लिखिए।

(ख) 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के आधार पर नायिका (ध्रुवस्वामिनी) के चरित्र की विशेषतायें स्पष्ट कीजिए।

(ग) हजारीप्रसाद द्विवेदी के रेखाचित्र 'एक कुत्ता और एक मैना' की समीक्षा लिखिए।

(घ) संस्मरण का अर्थ स्पष्ट करते हुए महादेवी वर्मा के संस्मरण 'निराला भाई' का सविस्तार वर्णन कीजिए।

(ङ) नाटकीय तत्वों के आधार पर 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक की समीक्षा कीजिए।

Roll. No. : 22048023 00 28

UMJ-1621

B.A. (Second Semester)

NEP-Examination, 2023

हिन्दी साहित्य (अनिवार्य प्रश्नपत्र)

[प्रथम प्रश्न पत्र (Major)]

[हिन्दी कथा साहित्य]

Time : 3 Hours] [M.M. : 75

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

खण्ड 'अ'

1. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं तीन की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिये : 6×3 = 18

(क) धर्म की बुद्धिहीन दृढ़ता और देव–दुर्लभ त्याग पर धन बहुत झुंझलाया। अब दोनों शक्तियों में संग्राम होने लगा। धन ने उछल–उछलकर आक्रमण करने शुरु किये। एक से पाँच–पाँच से दस, दस से पन्द्रह और पन्द्रह से बीस हजार तक नौबत पहुँची, किन्तु धर्म अलौकिक

वीरता के साथ बहुसंख्यक सेना के सम्मुख अकेला पर्वत की भांति अटल अविचलित खड़ा था।

(ख) इतना जल ! इतनी शीतलता ! ह्रदय की प्यास न बुझी, पी सकूँगी ? नहीं तो जैसे बेला से चोट खाकर सिन्धु चिल्ला उठता है, उसी के समान रोदन करुँ। या जलते हुए स्वर्ण–गोलक सदृश अनन्त जल में डूबकर बुझ जाऊँ ? चम्पा के देखते–देखते पीड़ा और ज्वलन से आरक्त बिम्ब धीरे–धीरे सिन्धु में चौथाई, आधा, फिर सम्पूर्ण विलीन हो गया। एक दीर्घ निःश्वास लेकर चम्पा ने मुँह फेर लिया।

(ग) मेरे मन में उस समय तरह–तरह के सिद्धांत आये। मैंने स्थिर किया कि अपराध के प्रति करुणा ही होनी चाहिए, रोष का अधिकार नहीं है। प्रेम से ही अपराधवृत्ति को जीता जा सकता है। आतंक से उसे दबाना ठीक नहीं है। बालक का स्वभाव कोमल होता है और सदा ही उससे स्नेह से व्यवहार करना चाहिए, इत्यादि।

(घ) नहीं भाई, पाप–पुण्य की समीक्षा मुझसे न होगी। जज हूँ, कानून की तराजू की मर्यादा जानता हूँ। पर उस ताराजू की जरूरत को भी जानता हूँ। इसलिए कहता हूँ कि जिनके ऊपर राई–रत्ती–नाप–जोखकर पापी को पापी

कहकर व्यवस्था देने का दायित्व है वे अपनी जाने। मेरे बस का वह काम नहीं है। मेरी बुआ पापिष्ठा नहीं थीं, यह भी कहने वाला मैं कौन हूँ। पर आज मेरा जी अकेले में उन्हीं के लिए चार आँसू बहाता है।

(ङ) विवाह की ग्रंथि दो के बीच की ग्रंथि नहीं है, वह समाज के बीच की भी है। चाहने से ही वह क्या टूटती है। विवाह भावुकता का प्रश्न नहीं, व्यवस्था का प्रश्न है। वह प्रश्न क्या यों टाले टल सकता है ? वह गाँठ है जो बँधी कि खुल नहीं सकती। टूटे तो टूट भले ही जाए, लेकिन टूटना कब किस का श्रेयस्कर है ?

खण्ड 'ब'

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

2. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए– 6×2 = 12

(क) 'उसने कहा था' कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

(ख) 'नमक का दरोगा' के पात्र मुंशी वंशीधर के चरित्र की किन्हीं तीन विशेषताओं को उद्धरण सहित समझाइये।

(ग) 'त्यागपत्र' उपन्यास के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

(घ) 'त्यागपत्र' उपन्यास की भाषा–शैली पर प्रकाश डालिए।

4

खण्ड 'स'

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

3. निम्नांकित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों का उत्तर विस्तार से दीजिए–(प्रत्येक 15 अंक) $15\times3 = 45$

(क) प्रेमचंद की कहानी कला की विशेषताएँ बतलाइए।

(ख) कहानी कला के तत्वों के आधार पर 'उसने कहा था' कहानी की समीक्षा कीजिए।

(ग) उपन्यास के उद्भव एवं विकास पर प्रकाश डालिए।

(घ) जैनेन्द्र जी की उपन्यास कला की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

(ङ) 'दोपहर का भोजन' कहानी की कथावस्तु की समीक्षा लिखिए।

****

①

UPC - 0033612402

Total Pages : 4

Roll No. 220480230028.

B.A. (Sixth Semester)

NEP - Examination, 2025

Hindi Literature

Paper–Second (Major)

[लोक साहित्य]

Time : 3 Hours] **[Maximum Marks : 75**

नोट : निम्नलिखित सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। अंक विभाजन प्रत्येक प्रश्न के समक्ष निर्दिष्ट हैं।

(खण्ड-अ)

1. निम्नांकित में से किन्हीं **तीन** की संदर्भ प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए : (6×3=18)

(क) नी बतूना योद्धा, यो धरती माज दादू राजचंद्रा
दु छ्यूँण-दुछयूँछ वश काणी आज दादू रामचंद्रा
विथ भई धनुलो, मैं धरती उठूँलो दादू राजचंद्रा
माथी ठिपी बेरा पतली ले लफूँला दादू रामचंद्रा
माता कसो घड़ो हाथूँलै टिपूलो दादू रामचंद्रा

(2)

धरती चुट दयूलो, चुरो करी द्यूलो दादू रामचंद्रा
हमुना दुछयों छ ये नि औनी लाज दादू रामचंद्रा
रघुवंशी जोधा ज्यून छना आज दादू रामचंद्रा।।
धुन-धरा फूलो नागरा कुंजा।

(ख) सबै तारा, सबै तारा एक पुजि गई
वृसपती लै क्या बेर लैछ?
सबै देवता, सबै देवता ए पुजि गई
बरमा बिस्नु, लै क्या बेर लैछ।
सबै पितर, सबै पितर ए पुजि गई।

(ग) भौंत पैलिया क बखत मैं एक बड सौंकार आदिम छि, उबड दानि धरिमातमा भै और वीकि धरवालि लै उसी भलि भै, पौंण कैं छाकु भिकारि कै भीक दिनेर भै। द्विये सौंणि बैग एतुक भल भै कि सबै अनदि बाहिवाही करनेर भै पर उं निर संतानि भै। कई बरसन बाद भई लै त चेलि। लोक कूनेर भै कि जां नाक वां नथ नैं। एतानि माया पर उकैं खाणि क्वे नैं। द्वीनै की बड़ि लड़िली भैउ चेलि। जब उ चेलि सात-आठ बरसै कि भई त वी कि इज सख्त बिमार पड़ि। बचणैं कि के आस नि रै। आपण आखिरी बखत में वील मालिक थैं कयौ: "मैं त आब निं बचन्युं। यो चेलि आब तुमरी पालणि छु। तुम मेरि यो आखिरी बात धरि दिया कि दुसर ब्या झन करिया। नानि का लिजिया सौतेलि मैं झन लया"।

(घ) राजुली है गेछ खड़ पूनी हुलरानी-दुलरानी
ठुम-ठुम हिटैछी राजुली, छम-छम बोलाँछी
द्वी चार साल कि राजुली पाँच छयै साल की
आठ-दश वर्ष की राजुली बाकरा चरूँछी।
इनुकी देखींनी छोरी इतुक रूपौसि वया माठ-माठू हिरँही
खुटा की पैंतोली होली धोबी कैसी मुङरी
कमर का ज्वाला जणी ससुरमाली का ठाणा
नृणियों की ख्वार मंजा कुकुड़िया केश
चम-चम चमकैंछि राजुला दुतिया कसि जून।।

(ङ) मैंसर केदार होलो गँवार दीदी मैंसर केदार हो लो
कूमि भूमेसर सर्ग मटेसर पाताल काली नाम
मैंसर काँ छाड़ी ऐछै गँवार दीदी मैंसर काँ छाड़ी ऐछै?
मैंसर तिरयुगी होलो गँवार दीदी मैंसर विरथुमी होलो
मैंसर काँ छाड़ी ऐछै गंवाद दीदी मैंसर काँ छाड़ी ऐछै?
मैंसर उजिमठ होलो गँवार दीदी मैंसर उजिमठ होलो।

(खण्ड-ब)

2. निम्नांकित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (6×2=12

(क) लोक संस्कृति की अवधारणा को समझाइए।

(ख) लोक नाट्य 'नौटंकी' का परिचय दीजिए।

(ग) व्रत कथाओं पर प्रकाश डालिए।

(घ) 'श्रम परिहार' गीतों की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

(ङ) राजुला-मालूशाही लोक गाथा की नायिका राजुला का सौन्दर्य चित्रण।

(खण्ड-स)

3. निम्न में से **तीन** सभी प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक दीजिए : (15×3=45)

(क) 'वर्तमान संदर्भ में लोक संस्कृति का महत्त्व' विषय पर निबंध लिखिए।

(ख) लोक साहित्य को परिभाषित करते हुए उसके विभिन्न रूपों को सोदाहरण समझाइए।

(ग) लोक गाथा से आप क्या समझते हैं? लोक गाथा की प्रवृत्तियों को सविस्तार बताइए।

(घ) लोक गीतों के अर्थ एवं स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए संस्कार गीतों को विस्तार से समझाइए।

(ङ) कुमाउनी लोक साहित्य वर्गीकरण विस्तार से समझाइए।

UPC - 0033222301

Total Pages : 2

Roll No. ....

B.A./B.Sc./B.Com. (IInd Semester)

NEP - Examination, 2025

हिन्दी

माइनर इलैक्टिव

हिन्दी भाषा : व्याकरण

Time : 3 Hours] **[Maximum Marks : 75**

(खण्ड-अ)

1. निम्नांकित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (5×6=30)

(क) व्यंजन से क्या आशय है? व्यंजनों का वर्गीकरण कीजिए।

(ख) वर्तनी विश्लेषण क्या हैं? वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों का उल्लेख कीजिए।

(ग) शब्द से क्या तात्पर्य है? अर्थ के आधार पर शब्दों के भेद कीजिए।

(घ) 'प्रत्यय' का अर्थ स्पष्ट करते हुए कृत प्रत्यय और तद्धित प्रत्यय को सोदाहरण समझाइए।

(ङ) रचना के आधार पर शब्द के भेदों का वर्णन कीजिए।

(2)

(च) पारिभाषिक शब्द किसे कहते हैं? पारिभाषित शब्द की विशेषताएं बताइए।

(छ) संधि किसे कहते हैं? स्वर संधि के भेद कीजिए।

(ज) विराम चिन्ह से क्या अभिप्राय है? अल्पविराम एवं पूर्ण विराम का प्रयोग कहां-कहां किया जाता है? उदाहरण सहित समझाइए।

(खण्ड-ब)

2. निम्नांकित में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (3×15=45)

(क) वाक्य से क्या अभिप्राय है? वाक्य विश्लेषण एवं वाक्य संश्लेषण को समझाइए।

(ख) व्यंजन और विसर्ग संधि के नियमों का विस्तृत वर्णन कीजिए।

(ग) पर्यायवाची, विलोम और अनेकार्थी शब्द को परिभाषित कीजिए। 'अर्थ, खल, खग, मित्र, उत्तर' शब्दों के विलोम एवं अनेकार्थी शब्द लिखिए।

(घ) 'उपसर्ग' की परिभाषा दीजिए। संस्कृत और हिन्दी से बने उपसर्गों का विस्तार से उल्लेख कीजिए।

(ङ) 'समास' किसे कहते हैं? समास के विभिन्न भेदों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

 Roll No. ....

UMJ-1641

B.A. (IV Semester)

Examination, 2024

HINDI

Paper–First (Major)

[नाटक एवं स्मारक साहित्य]

Time : 3 Hours] **[Maximum Marks : 75**

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(खण्ड-अ)

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. (क) आह, कितनी कठोरता है! मनुष्य के हृदय में देवता को हटाकर राक्षस कहां से घुस आता है? कुमार की स्निग्ध, सरल औश्र सुन्दर मूर्ति को देखकर कोई भी प्रेम से पुलकित हो सकता है। किंतु, उन्हीं का भाई? आश्चर्य।

   (ख) राजा अपने राष्ट्र की रक्षा करने के असमर्थ है, तब भी उस राजा की रक्षा होनी ही चाहिए। अमान्य, यह कैसी विवशता है। तुम मृत्युदंड के लिए उत्सुक। महादेवी आत्महत्या करने

के लिए प्रस्तुत। फिर यह हिचक क्यों? एक बार अंतिम बल से परीक्षा कर देखो। बचोगे तो राष्ट्र और सम्मान भी बचेगा, नहीं तो सर्वनाश।

(ग) राजनीति ही मनुष्यों के लिए सब कुछ नही है। राजनीति के पीछे नीति से भी हाथ न धो बैठो, जिसका विश्व मानव के साथ व्यापक संबंध है। राजनीति की साधारण छलनाओं से सफलता प्राप्त करके क्षण-भर के लिए तुम अपने को चतुर समझने की भूल कर सकते हो, परंतु इस भीषण संसार में एक प्रेम करने वाले ह्रदय को खो देना सबसे बड़ी हानि है।

(घ) प्रेम का नाम न लो! वह एक पीड़ा थी जो छूट गई। उसकी कसक भी धीरे-धीरे दूर हो जाएगी। राजा, मैं तुम्हें प्यार नही करती। मैं तो दर्प से दीप्त तुम्हारी महत्वमयी पुरूष-मूर्ति की पुजारिन थी, जिसमें पृथ्वी पर अपने पैरों से खड़े रहने की दृढ़ता थी। इस स्वार्थ-मलिन कलुष से भरी मूर्ति से मेरा परिचय नहीं। अपने तेज की अग्नि में जो सब कुछ भस्म कर सकता हो, दस दृढ़ता का, आकाश के नक्षत्र कुछ बना-बिगाड़ नही सकते।

(ङ) इतना बड़ा उपहास....... धर्म के नाम पर स्त्री की आज्ञाकारिता की यह पैशाचिक परीक्षा.......... मुझसे बलपूर्वक ली गयी है। पुरोहित! तुमने जो मेरा राक्षस-विवाह कराया – उसका उत्सव भी कितना सुंदर है! यह जन-संहार देखो, अभी उस प्रकोष्ठ में रक्त से सनी हुई शकराज की लोथ पड़ी होगी। कितने ही सैनिक दम तोड़ते होंगे। और इस रक्तधारा में तिरती हुई मैं राक्षसी-सी सांस ले रही हूं। (6×3=18)

(खण्ड-ब)

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

2. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (6×2=12)

(क) 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के नायक का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(ख) रेखाचित्र तथा संस्मरण को परिभाषित कीजिए।

(ग) नाटक की परिभाषा एवं उसके तत्वों का वर्णन कीजिए।

(घ) 'अज्ञेय' के कृतित्व तथा व्यक्तित्व पर एक लेख लिखिए।

(खण्ड-स)

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

3. निम्नांकित प्रश्नों में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों का उत्तर विस्तार से दीजिए। (15×3=45)

(क) स्मारक साहित्य के उद्‌भव एवं विकास पर एक निबंध लिखिए।

(ख) 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के आधार पर नायिका (ध्रुवस्वामिनी) के चरित्र की विशेषतायें स्पष्ट कीजिए।

(ग) हजारीप्रसाद द्विवेदी के रेखाचित्र 'एक कुत्ता और एक मैना' की समीक्षा लिखिए।

[P.T.O.

(घ) संस्मरण का अर्थ स्पष्ट करते हुए महादेवी वर्मा के संस्मरण 'निराला भाई' का सविस्तार वर्णन कीजिए।

(ङ) नाटकीय तत्वों के आधार पर 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक की समीक्षा कीजिए।

Roll No. : 22048023 0028

UMJ-1631

B.A. (Third Semester)

NEP - Examination, 2023-24

हिन्दी साहित्य (अनिवार्य प्रश्नपत्र)

[प्रथम प्रश्न पत्र (Major)]

[रीतिकालीन काव्य एवं काव्यांग विवेचन]

[Time : 3 Hours] [Maximum Marks : 75]

नोटः सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

खण्ड - अ

1. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं तीन की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए- (3×6=18)

(क) बालक मृनालनि ज्यों तोरि डारै सब,
काल कठिन कराल त्यों अकाल दीह दुख कों।
विपति हरत हठि पद्मनी के पात सम,

पंक ज्यों पाताल पेलि पठवे कलुष को।
दूरि के कलंक अंक भव-सीस ससि,
सम राखत हैं 'केसोदास' दास बपुष को,
साँकरे की साँकरनि सन्मुख होत तौरें,
दसमुख मुख जोवै गजमुख मुख कों।

(ख) मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाँई परैं, स्यामु हरित-दुति होइ।।
कनक-कनक ते सौगुनी, मादकता अधिकाइ।
उहि खायें बौराइ जग, इहिं पायें हीं बोराइ।।

(ग) अति सूधो सनेह को मारग है जहाँ नैकुसयानप बाँक नहीं,
तहाँ साँचे चलै तजि आपुनपौं झझकैं कपटी जे निसाँक नहीं।
घनआनंद प्यारे सुजान सुनो यहाँ एक तें दूसरो आँक नहीं।
तुम कौन धौं पाटी पढ़े हौंलला मनलेहु पै देहु छटाँक नहीं।

(घ) जासि चतुरंग वीर रंग मैं तुरंग चढि,
सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है।
भूषन भनत नाद विहद नगारन के,
नदी नद मद गैबरन के रलत है।।
एल फैल खैल भैल खलक में गैल गैल,
गजन की ठेल पेल सैल उसलत है
तारा सो तरनि धूरि धारा मैं लगत जिमि,

धारा पर धारा धारावार सी ढरत है।।

खण्ड - ब

2. निम्नांकित आठ प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(प्रत्येक 6 अंक) (2×6=12)

(क) केशवदास हृदयहीन कवि है। इस कथन की समीक्षा कीजिये और बताइये इस मत से आप कहाँ तक सहमत हैं?

(ख) रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि बिहारी की काव्यगत विशेषताओं का निरुपण सोदाहरण कीजिए।

(ग) श्रृंगार रस (संयोग, वियोग) का सोदाहरण वर्णन कीजिये।

(घ) लक्षणा शब्द शक्ति की परिभाषा देते हुए उसका महत्व बताइये।

(ङ) यमक, श्लेष, संदेह तथा अतिशयोक्ति अलंकारों का लक्षण एवं उदाहरण सहित समझाइये।

(च) दोहा, सोरठा, चौपाई छंदों के लक्षण एंव उदाहरण दीजिए।

(छ) 'भूषण' वीर रस के श्रेष्ठ कवि है" इस कथन पर प्रकाश डालिए।

(ज) घनानंद के प्रेमवर्णन की विशेषताओं को उदाहरण देकर समझाइये।

खण्ड - स
(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

3. निम्नांकित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों का उत्तर विस्तार से दीजिए- (प्रत्येक 15 अंक) **(3×15=45)**

(क) रीतिकाल का परिचय देते हुए रीतिकालीन साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियों को विस्तार से समझाइये।

(ख) काव्य में रस की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए रस के विभिन्न अवयवों का विश्लेषण कीजिये।

(ग) अलंकार की परिभाषा देते हुए उसके भेदों को उदारहण सहित समझाइये।

(घ) केशवदास की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिये।

(ङ) महाकवि देव की काव्यगत विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

UMJ-1611

B.A. (First Semester)

NEP-Examination, 2022

हिन्दी साहित्य (अनिवार्य प्रश्नपत्र)

[प्रथम प्रश्न पत्र (Major)]

[प्राचीन एवं भक्तिकालीन काव्य]

Time : 3 Hours] **[Maximum Marks : 75**

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

खण्ड 'अ'

1. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं तीन की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए– 6×3 = 18

(क) मनहुँ काम कामिनि रचिय, रचिय रूप की रास।
पसु पंछी सब मोहिनी, सुर, नर, मुनियर पास ।।
सामुद्रिक लच्छन सकल, चौंसठि कला सुजान।
जानि चतुरदस अंग, षट, रति वसन्त परमान ।।

(ख) मानसरोवर सुभर जल हँसा केलि कराहिं।
मुकताहल मुकता चुगैं, अब उड़ि अनत न जाहिं॥
देवल माँहै देहुरी, तिल जेहै बिसतार।
माँहै पाती माँहि जल, माँहै पूजणहार॥

(ग) सखी एक तेइ खेल न जाना। भै अचेत मनि–हार गँवाना॥
कवँल डार गहि, भै बेकरारा कासौं पुकारौ आपन हारा॥
कित खेलै अइऊँ एहि साथा। हार गँवाइ चलिऊँ लेइ हाथा॥
घर पैठत पूँछब यह हारु। कोन उतर पाउब पैसारू॥
नैन सीस आँसू तस भरे। जानौ मोति गिरहिं सब ढरे॥
सरिवन कहा बौरी कोकिला। कौन पानि जेही पौन न मिला?॥
हार गँवाइ सो ऐसै रोवा, हेरि हेराइ लेइ जौं खोवा॥
लागी सब मिली हेरै बूड़ि बूड़ि एक साथ॥
कोई उठी मोती लेइ, काहू घोंघा हाथ॥

(घ) मुक्ति आनि मंदे मैं मेली।
समुझि सगुन लै चले न उधौ, यह तुम पै सब पुँजि अकेली॥
कैलै जाहु अनत ही बैचौं, कै लै राखु जहाँ विष–वेली।
याहि लागि को मरै हमारैं, वृन्दावन चरननि सौ टेली॥
धरे सीस घर–घर डोलत हौ, एकै मत सब भई सहेली।
सूरदास गिरिधरन छबीलौ, जिनकी भुजा कँठ धरि खेली॥

खण्ड 'ब'

2. निम्नांकित आठ प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए–(प्रत्येक 6 अंक) 6×2=12

(क) तुलसीदास के समन्वयवादी कवि क्यों कहा जाता है ? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

(ख) पद्मावती के रूप सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

(ग) 'साखी' शब्द का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

(घ) जायसी के नख–शिख वर्णन पर प्रकाश डालिए।

(ङ) सूरदास को 'वात्सल्य सम्राट' क्यों कहा जाता है ? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

(च) 'पद्मावती समय' की भाषा पर प्रकाश डालिए।

(छ) कबीर के समाज–सुधारक रूप का परिचय कीजिए।

खण्ड 'स'

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

3. निम्नांकित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों का उत्तर विस्तार से दीजिए–(प्रत्येक 15 अंक) 15×3 = 45

(क) भक्तिकाल की प्रमुख शाखाओं का वर्गीकरण करते हुए सभी शाखाओं का परिचय दीजिए।

(ख) तुलसीदास के लोकनायक रूप एवं लोक मर्यादा रूप पर प्रकाश डालिए।

(ग) निर्गुण काव्यधारा के कवि के रूप में कबीर की भक्ति भावना में समन्वय की क्या महत्ता है ? स्पष्ट कीजिए।

(घ) सूर के 'भ्रमरगीत' में गोपियों की विरह–वेदना को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

(ङ) जायसी के पदमावत महाकाव्य की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

****

UMJ-1611

B.A. (First Semester)

NEP - Examination, 2023-24

हिन्दी साहित्य (अनिवार्य प्रश्न पत्र)

[प्रथम प्रश्न पत्र (Major)]

[प्राचीन एवं भक्तिकालीन काव्य]

[Time : 3 Hours] [Maximum Marks : 75]

नोट: सभी प्रश्न पत्र अनिवार्य हैं।

खण्ड - अ

1. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं तीन की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए- (3×6=18)

(क) सतगुर की महिमा अनँत, अनँत किया उपगार।
लोचन अनँत उघाड़ियाँ अनँत दिखावणहार ॥

पीछे लागा जाय था, लोक वेद के साथि।
आगै थैं सतगुर मिल्या, दीपक दिया हाथि।।

(ख) खेलत मानसरोवर गई। जाइ पाल पर ठाढ़ी भई।।
देखि सरोवर हँसै कुलेली। पदमावति सौं कहहिं सहेली।।
ए रानी! मन देखु बिचारी। एहि नैहर रहना दिन चारी।।
जौ लगि अहै पिता कर राजू। खेलि लेहु जो खेलहु आजू।।
पुनि सासुर हम गवनब काली। कित हम, कित यह सखर-पाली।।
कित आवन पुनि अपने हाथा। कित मिलि कै खेलव एक साथा।।
सासु ननद बोलिन्ह जिउ लेही। दारुन ससुर न निसरै देही।।
पिउ पियार सिर ऊपर, पुनि सो करै दहुँ काह।
दहुँ सुख राखै की दुख, दहुँ कस जनम निबाह।।

(ग) ऊधौ मन न भए दस बीस।
एक हुतौ सो गयौ स्याम-संग, को अवराधै ईस।।
इंद्री सिथिल भई केशव बिनु, ज्यौं देही बिन सीस।
आसा लागि रहित तन स्वासा, जीवहिं कोटि बरीस।।
तुम तौ सखा स्याम सुंदर के, सकल जोग के ईस
'सूर' हमारे नँदनंदन बिनु और नहिं जगदीस।।

(घ) अबलौं नसानी, अब न नसैहों।

राम-कृपा भव निसा सिरानी, जागे पुनि न डसैहों।।

पायो नाम चारुचिंतामनि, उरकर तें न खसैहों।

स्यामरूप सुचि रुचिर कसौटी, चित कंचनहि कसैहों।।

परबस जानि हँस्यो इन इन्द्रिन, निज बस ह्वै न हँसैहो।

मन मधुकर पन कै तुलसी रघुपति - पद कमल बसैहों।।

खण्ड - ब

2. निम्नांकित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(प्रत्येक 6 अंक) **(2×6=12)**

(क) कबीर के राम का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

(ख) 'पृथ्वीराज रासो' की अलंकार योजना पर प्रकाश डालिए।

(ग) जायसी की भाषा-शैली का वर्णन कीजिए।

(घ) सूरदास की रचनाओं का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

(ङ) सूरदास की भक्ति-भावना पर विचार कीजिए।

(च) प्रेमाश्रयी शाखा पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

(छ) तुलसीदास की भक्ति-भावना को स्पष्ट कीजिए

खण्ड - स
(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

3. निम्नांकित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों का उत्तर विस्तार से दीजिए- (प्रत्येक 15 अंक) **(3×15=45)**

(क) 'पृथ्वीराज रासो' की प्रामाणिकता पर विस्तार से प्रकाश डालिए।

(ख) कृष्णाश्रयी शाखा की प्रमुख विशेषताओं व कवियों का वर्णन कीजिए।

(ग) सिद्ध कीजिए कि सूरदास वात्सल्य रस के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं।

(घ) रहस्यवाद से आप क्या समझते हैं। कबीर व जायसी के रहस्यवाद में अंतर स्पष्ट कीजिए।

(ङ) तुलसीदास की काव्य-कला पर विस्तार से प्रकाश डालिए।

UMJ-1621

B.A. (Second Semester)

NEP-Examination, 2024

हिन्दी साहित्य (अनिवार्य प्रश्नपत्र)

Paper–First (Major)

[हिंदी कथा साहित्य]

Time : 3 Hours] [Maximum Marks : 75

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(खण्ड-अ)

1. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं तीन की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए : (6×3=18)

(क) मन में एक गाँठ-सी पड़ती जाती थी। वह न खुलती थी, न घुलती थी। बल्कि कुछ करो, वह और उलझती और कसी ही जाती थी। जो होता था, कुछ होना चाहिए था, कुछ करना चाहिए, कहीं कुछ गड़बड़ है। कहीं क्यों, सब गड़बड़-ही-गड़बड़ है। सृष्टि गलत है, समाज गलत है, जीवन ही हमारा गलत है। सारा चक्कर यह ऊटपटाँग है। इसमें तर्क नहीं है, संगति नहीं है, कुछ नहीं है। इसमें जरूर कुछ होना होगा, कुछ करना होगा।

(ख) घटनाएँ होती है, होकर चली जाती है। हम जीते हैं और जीते-जीते एक रोज मर जाते हैं। जीना किस उछाह से आरम्भ करते है, पर उस जीवन के इस किनारे आते-जाते कैसे ऊब, कैसी उकताहट जी में भर जाती है। मैं इस लीला पर, इस प्रहेलिका पर सोचता रह जाता हूँ। कुछ पार नहीं मिलता, कुछ भेद नहीं पाता।

(ग) राम-राम, यह कोई लड़ाई है! दिन-रात खंदकों में बैठे हड्डियाँ अकड़ गयीं। लुधियाने से दस गुना जाड़ा और मेंह और बर्फ ऊपर से । पिंडलियों तक कीचड़ में धँसे हुए हैं। जमीन कहीं दिखती नहीं- घंटे दो घंटे में कान के परदे फाड़ने वाले धमाके के साथ सारी खंदक हिल जाती है और सौ-सौ गज धरती उछल पड़ती है। इस गैबी गोले से बचे तो कोई लड़े। नगर कोट का जलजला सुना था, यहाँ दिन में पचीस जलजले होते हैं।

(घ) मुहल्ले में चौधरी पीरबक्श की इज्जत थी। उस इज्जत का आधार था, घर के दरवाजे पर लटका परदा। भीतर जो हो, परदा सलामत रहता था। कभी बच्चों की खींच खाँच या बेदरद हवा के झोकों से उसमें छेद हो जाते तो परदे की आड़ में जनाने हाथ सुई-धागा लेकर उसकी मरम्मत कर देते थे।

(ङ) गजाधर बाबू ने आहत दृष्टि से पत्नी को देखा। उन्होंने अनुभव किया कि वह पत्नी व बच्चों के लिए केवल धनोपार्जन के निमित मात्र हैं। जिस व्यक्ति कि अस्तित्व से पत्नी माँग में सिन्दूर डालने की अधिकारी है, समाज में उसकी प्रतिष्ठा है, उनके सामने वह दो वक्त की भोजन की

थाली रख देने से सारे कर्त्तव्यों से छुट्टी पा जाती है। वह घी और चीनी के डिब्बों में इतनी रमी हुई है कि अब वही उनकी सम्पूर्ण दुनिया बन गयी है।

(खण्ड-ब)

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

2. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(6×2=12)

(क) कहानी विधा पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

(ख) प्रेमचन्द की कहानियों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

(ग) 'त्यागपत्र' उपन्यास की मनोवैज्ञानिक दृष्टि से समीक्षा कीजिए।

(घ) 'उसने कहा था' कहानी की परिवेश गत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

(खण्ड-स)

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

3. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों का उत्तर विस्तार से दीजिए। (प्रत्येक 15 अंक)

(3×15=45)

(क) उपन्यास का स्वरूप स्पष्ट करते हुए प्रेमचन्दयुगीन उपन्यासों पर विस्तार से प्रकाश डालिए।

(ख) कहानीकला के तत्वों के आधार पर 'परदा' कहानी की समीक्षा कीजिए।

(ग) 'दोपहर का भोजन' कहानी की कथावस्तु व वातावरण संबंधी विशेषताओं की समीक्षा कीजिए।

(घ) 'त्यागपत्र' उपन्यास की भाषा-शैली संबंधी विशेषताओं को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

(ङ) हिंदी गद्य के विकास पर विस्तार से प्रकाश डालिए।

NEP - Examination, 2025

HINDI

Paper–First (Major)

[नाटक एवं स्मारक साहित्य]

Time : 3 Hours] [Maximum Marks : 75

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(खण्ड-अ)

1. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं **तीन** की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए : (3×6=18)

(क) इस निर्मम संचार ने जीते जी न प्रेमचंद को परखा, न 'प्रसाद' को और न 'निराला' को ही। जब ये संसार में चले गए, तब इनके गुणगान के साथ यह भी अनुभूत होने लगा कि साहित्य क्षेत्र में ये अमोध मेधाशक्ति लेकर आए थे। 'प्रसाद' जी की जो अवज्ञा और उपेक्षा हुई वह किसी से छिपी नहीं है। पर हिंदी को 'प्रसाद' जी कविता, कहानी,

उपन्यास, नाटक, निबंध आदि के रूप में जो निधि दे गए, उसका मूल्यांकन करके आज गौरव का अनुभव किया जा रहा है। जगत की यही परंपरागत रीति जान पड़ती है कि वह युग की विभूति को उसके विलीन हो जाने के बाद ही पहचानता है।

(ख) गुरुदेव वहाँ बड़े आनंद में थे। अकेले रहते थे। भीड़-भीड़ उतनी नहीं होती थी, जितनी शांतिनिकेतन में। जब हम लोग ऊपर गए तो गुरुदेव बाहर एक कुर्सी पर चुपचाप बैठे अस्तगामी सूर्य की ओर ध्यान-स्तिमित नयनों से देख रहे थे। हम लोगों को देखकर मुस्कराए, बच्चों से जरा छेड़-छाड़ की, कुशल-प्रश्न पूछे और फिर चुप हो रहे। ठीक उसी समय उनका कुत्ता धीरे-धीरे ऊपर आया और उनसे पैरों के पास खड़ा होकर पूँछ हिलाने लगा। गुरुदेव ने उसकी पीठ पर हाथ फेरा। वह आँख मूंदकर अपने रोम-रोम से उस स्नेह रस का अनुभव करने लगा।

(ग) उसे ऋषि कहा जाता है। वह हैं भी। पर वह राजर्षि है, ब्रह्मर्षि नहीं। उससने गुणों का दुरुपयोग नहीं किया; प्रकृति के प्रदान किए हुए गुण का उसने सदुपयोग ही किया, वह चाहे राजाओं को शोभनेवाला रजोगुण हो, चाहे योगियों को मोदनेवाला सतोगुण। स्वामी राम के कथानुसार उसने तमोगुण की भी अवदेलना नहीं की। एक अपनी दुनिया के संभवशील निर्माता ही हैसियत से उसने अपने अनुनायियों या जीवों के आगे कोई ऐसी बात नहीं रखी जिसे वे असंभव कहकर छोड़ सकें। उसने पहले तरह-तरह की क्रियाएँ उत्पन्न करके भारतवर्ष में उलट-पलट की परिस्थितियों को निर्भीकता और सावधानता से उत्पन्न किया।

(घ) मेरी रक्षा करो। मेरे और अपने गौरव की रक्षा करो। राजा, आज मैं शरण की प्रार्थिनी हूं। मैं स्वीकार करती हूं की आज तक मैं तुम्हारे विलास की सहचरी नहीं हुई, किंतु वह मेरा अहंकार चूर्ण हो गया है। मैं तुम्हारी होकर रहूंगी। राज्य और संपत्ति रहने पर राजा को पुरुष को बहुत-सी रानियां और स्त्रियां मिलती हैं, किंतु व्यक्ति का मान नष्ट होने पर फिर नहीं मिलता।

(ङ) अमात्य, तुम गौरव किसको कहते हो? वह है वहीं? रोग जर्जर शरीर पर अलंकारों की सजावट, मलिनता और कलुष की देरी पर बाहरी कुंकुम-केसर का लेप गौरव नहीं बढ़ाता कुटिलता की प्रतिमूर्ति- बोलो! मेरी वाग्दत्त पत्नी और पिता द्वारा दिए हुए मेरे सिंहासन का अपहरण किसके संकेत से हुआ? और छल से ....?

(खण्ड-ब)

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

2. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : $(6\times2=12)$

(क) संस्मरण एवं रेखाचित्र में अंतर स्पष्ट कीजिए।

(ख) प्रसादयुगीन नाट्य साहित्य पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

(ग) महादेवी वर्मा के संस्मरण साहित्य पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

(घ) 'रेखाचित्र' विधा की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

(खण्ड-स)

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों का उत्तर विस्तार से दीजिए : (15×3=45)

(क) 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के नायक (चन्द्रगुप्त) की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

(ख) स्मारक साहित्य की प्रमुख विधाओं का वर्णन कीजिए।

(ग) शिवपूजन सहाय के रेखाचित्र 'महाकवि जयशंकर प्रसाद' की समीक्षा कीजिए।

(घ) 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक की भाषा-शैली संबंधी विशेषताओं को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

(ङ) अज्ञेय के संस्मरण 'स्मरण का स्मृतिकार रायकृष्णदास' की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

Total Pages : 4

Roll No. 220480230025

UMJ-1651

B.A. (Fifth Semester)

NEP - Examination, 2024-25

HINDI LITERATURE

Paper - First

[द्विवेदीयुगीन एवं छायावादी काव्य]

Time : 3 Hours] **[Maximum Marks : 75**

नोट : निम्नलिखित सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। अंक विभाजन प्रत्येक प्रश्न के समक्ष निर्दिष्ट हैं।

(खण्ड-क)

1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं **तीन** की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए– (10×3=30)

(क) अरूणिमा-जगती-तल-रंजिनी।
वहन थी करती अब कालिमा।
मलिन थी नव-राग-मयी-दिशा।
अवनि थी तमसावृत हो रही।

तिमिर की यह भूतल-व्यापिनी।
तरल-धार विकास-विरोधिनी।
जन-समूह-विलोचन के लिए।
बन गई प्रति-मूर्ति विराम की।

(ख) चेरी भी वह आज कहाँ, कल थी जो रानी;
दानी प्रभु ने दिया उसे क्यों मन यह मानी?
उबला-जीवन, हाय! तुम्हारी यही कहानी–
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।
मेरा शिशु-संसार वह
दूध पिये, परिपुष्ट हो,
पानी के ही पात्र तुम
प्रभु, रूष्ट या तुष्ट हो।

(ग) देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार।
देख कर कोई नहीं
देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोई नहीं।
सजा सहज सितार,
सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार।
एक क्षण के बाद वह काँपी सुधर,
ढुलक माथे से गिरे सीकर,
लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा–
'मैं तोड़ती पत्थर'।

(घ) बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ।
नींद भी मेरी अचल निस्पंद कण-कण में,
प्रथम जागृति थी जगत के प्रथम स्पंदन में;
प्रलय में मेरा पता पदचिह्न जीवन में,
शाप हूँ जो बन गया वरदान बंधन में,
कूल भी हूँ, कूलहीन प्रवाहिनी भी हूँ!
नयन में जिसके जलद वह तृषित चातक हूँ,
शलभ जिसके प्राण में वह निठुर दीपक हूँ।

(ङ) द्रुत झरो जगत के जीर्णपत्र
हे स्रस्त ध्वस्त, हे शुष्क शीर्ण।
हिम-ताप-पीत, मधुवात-भीत,
तुम वीतराग, जड़, पुराचीन!।
निष्प्राण विगत युग! मृत विहंग
जग नीड़ शब्द औ। श्वासहीन,
च्युत, अस्तव्यस्त पंखो-से तुम
झर-झर अनंत में हो विलीन!

(खण्ड-ब)

2. निम्नांकित में से किन्हीं **तीन** लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर दीजिए– (5×3=15)

(क) द्विवेदी युग के उद्भव विकास पर प्रकाश डालिए।

(ख) 'छायावाद' को परिभाषित करते हुए छायावाद की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

[P.T.O.

(ग) 'परिवर्तन' नामक कविता के माध्यम से सुमित्रा नंदन पंत क्या संदेश देना चाहते हैं? स्पष्ट कीजिए

(घ) सिद्ध कीजिए कि 'महादेवी वर्मा विरह कोकिला' हैं।

(ङ) जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'आँसू' नामक काव्य रचना के भाव पक्ष पर प्रकाश डालिए।

(च) मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'यशोधरा' का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

3. निम्नांकित दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों में से किन्हीं **तीन** के उत्तर विस्तारपूर्वक दीजिए– (10×3=30)

(क) सिद्ध कीजिए कि "मैथिलीशरण गुप्त एक राष्ट्रीय कवि हैं।"

(ख) छायावाद से क्या तात्पर्य है? छायावाद को परिभाषित करते हुए छायावादयुगीन प्रवृत्तियों पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डालिए।

(ग) "सुमित्रानन्दन पंत प्रकृति के सुकुमार कवि हैं।" इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं? सोदाहरण प्रकाश डालिए।

(घ) "महादेवी वर्मा के काव्य में प्रेम और सौन्दर्य का उत्कृष्ट और आदर्श स्वरूप विद्यमान है।"

(ङ) 'छायावाद के चार स्तम्भ' से क्या तात्पर्य है? इन चारों स्तम्भों पर प्रकाश डालिए।

(च) आपकी पाठ्यपुस्तक में संकलित निराला द्वारा लिखित 'राम की शक्ति पूजा' के भाव पक्ष और कला पक्ष पर विचार प्रस्तुत कीजिए।